राग जैतसरी

संस्कृत ग्रन्थों में जैस्री, जयंत श्री आदि नामों से सम्बोन्धित श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में अंकित राग जैतसरी ही है। बड़े मनोरंजक और कठिन राग को शुद्धता सहित महान कीर्तनकार गायक ही गा सकते हैं। जैतसरी का प्रभाव सुख और खुशी देने वाला है। खुशी देने के लिए मन के ''आलसीआ उघलाना'' वाला स्वभाव छोड़ हृदय में रतन–नाम को बसा कर गुरु बख्शीश लेनी पड़ती है।

आरोह	–	स ग, म प, नी सं।
अवरोह	–	सं नी ध प, म ग, रे स।
स्वर	–	ऋषभ धैवत कोमल एवं मध्यम तीव्र अन्य शुद्ध, आरोह में ऋषभ व धैवत वर्जित।
थाट	–	पूर्वी
जाति	–	औड़व–सम्पूर्ण
समय	–	दिन का चतुर्थ प्रहर
वादी	–	गंधार
संवादी	–	निषाद
मुख्य अंग	–	स, ग, प, म ध प, म ग, म ग, रे स।
स्वर विस्थार	–	1. स, नी स, ग, रे स, नी ध प, म प नी स, नी स ग, म प, म ध प, म ग, ध प म ग, म ग रे स। 2. स ग, म प, म ध प, म प नी ध प, म प नी सं, सं रें सं, नी सं गं, सं गं मं पं, मं गं रें सं, नी सं रें नी ध प, म ग प, म ध प म ग, म ग, रे स।

जैतसरी महला ५॥ (७०१-०२)

कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि॥ चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि॥१॥रहाउ॥ मनु तनु निरमल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि॥ इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि॥१॥ आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुहरी और॥ अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि॥२॥५॥६॥

जैतसरी महला ४ घरु २

१ओ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६८)

हरि हरि सिमरहु अगम अपारा॥ जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा॥ हरि हरि सतिगुरु पुरखु मिलावहु गुरि मिलिऐ सुखु होई राम॥१॥ हरि गुण गावहु मीत हमारे॥ हरि हरि नामु रखहु उर धारे॥ हरि हरि अंम्रित बचन सुणावहु गुर मिलिऐ परगटु होई राम॥२॥ मधुसूदन हरि माधो प्राना॥ मेरै मनि तनि अंम्रित मीठ लगाना॥ हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु पुरखु निरंजनु सोई राम॥३॥ हरि हरि नामु सदा सुखदाता॥ हरि कै रंगि मेरा मनु राता॥ हरि हरि महा पुरखु गुरु मेलहु गुर नानक नामि सुखु होई राम॥४॥१॥७॥

राग जैतसरी

(1) तीन ताल

LFkkbZ%

				सप	मप	म	प	म	मग	रे	स	–	गम	प	म
				को0	ई0	ज	नु	ह	रि0	सि	उ	0	दे0	0	वै
प	–	–	प	गम	पध	म	प	नीनी	ध	प	प	मम	गरे	म	ग
जो	0	0	रि	च0	र0	न	ग	हउ	0	0	ब	कउ	00	सु	भ
म	ग	रे	स	–	सप	मप	पप	प	मध	प	प	मप	नीसं	रेंरें	संनी
र	स	ना	0	0	दी0	00	जहि	प्रा	00	न	अ	को0	00	00	00
धप	मग	मग	रेस												
00	00	00	रि0												
X				2				0				3			

vUrjk%

				–	पप	प	प	–	(प)	ग	म	–	प	नी	नी
				0	मनु	त	नु	0	निर	म	ल	0	क	र	त
संसं	–	सं	संसं	सं	गं	–	–	गं	रें	सं	सं	नी	सं	नी	सं
किआ0		रो	हरि	सिं	चै	0	सु	धा	0	0	सं	जो	0	0	0
रें	नी	ध	प	म	गम	प	नी	नीनी	ध	प	प	मप	मग	मग	रेस
0	0	0	रि	इ	आ0	र	स	महि	म	ग	नु	हो0	00	त0	किर
ग	रें	स	स	सप	मध	प	प	म	ध	प	–	मप	नीसं	रेंरें	संनी
पा	0	ते	0	म0	हा0	बि	खि	आ	0	ते	0	तो0	00	00	00
धप	मग	मग	रेस												
00	00	00	रि0												
X				2				0				3			

dhrZudkj Mk- fuofnrk flag ifV;kyk

राग जैतसरी

(2) तीन ताल

LFkkbZ%

											ऩी	स	ग	–	म
											ह	रि	ह	0	रि
प	प	पप	–	म	ग	ग	म	ग	रे	स	म	ग	म	–	प
सि	म	रहु	0	अ	ग	म	अ	पा	0	रा	जि	सु	सि	0	म
सं	सं	सं	सं	–	गं	गं	गं	रें	सं	सं	सं	सं	नी	–	ध
र	त	दु	खु	0	मि	टै	ह	मा	0	रा	जि	सु	सि	0	म
प	प	प	प	–	ग	ग	ग	रे	स	स					
र	त	दु	खु	0	मि	टै	ह	मा	0	रा					
X				2				0				3			

vUrjk%

											म	ग	म	–	प
											ह	रि	ह	0	रि
सं	सं	सं	सं	–	संसं	सं	सं	नी	रें	संसं	सं	सं	गं	–	गं
स	ति	गु	रू	0	पुर	खु	मि	ला	0	वहु	गु	रि	मि	0	लि
गं	रें	सं	सं	सं	(सं)	–	नीध	प	म	ग					
ऐ	0	0	सु	खु	हो	0	0ई	रा	0	म					
X				2				0				3			

dhrZudkj HkkbZ efgUnj flag lkxj